वर्ड स्मिथ

कैसे बना रेडियो शब्द

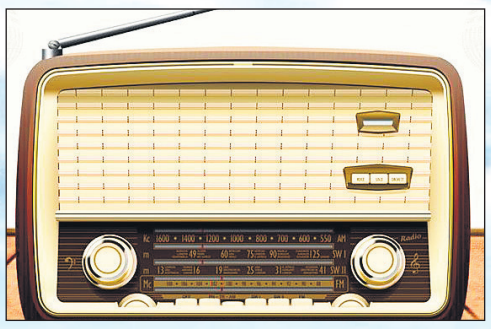

रेडियो एक छोटा-सा शब्द है, पर अपने भीतर विज्ञान और संचार की लंबी यात्रा समेटे हुए। इस शब्द की जड़ें लैटिन भाषा के शब्द 'रेडियस' में मिलती हैं, जिसका अर्थ है किरण। 19 वीं सदी के उत्तरार्ध में जब वैज्ञानिक अदृश्य तरंगों की दुनिया को समझने की कोशिश कर रहे थे, तब इन तरंगों का व्यवहार प्रकाश की किरणों जैसा प्रतीत हुआ। यही कारण था कि इनके प्रसार को 'किरणों' की तरह समझा गया और धीरे-धीरे 'रेडियो' शब्द का प्रचलन शुरू हुआ।

1880 के दशक में जर्मन भौतिक विज्ञानी हेनरिक हर्ट्ज़ ने यह सिद्ध कर दिया कि हवा में अदृश्य विद्युतचुंबकीय तरंगें फैल सकती हैं। इन्हीं तरंगों को आगे चलकर हर्ट्ज़यन तरंगें या रेडियो तरंगें कहा गया। उस समय इनका उपयोग तार के बिना संदेश भेजने के लिए होने लगा, इसलिए आरंभ में इसे 'वायरलेस' अर्थात तारहित संचार कहा जाता था। समय के साथ विज्ञान आगे बढ़ा और संचार की यह अदृश्य धारा दुनिया को जोड़ने लगी। 1906 में बर्लिन में आयोजित रेडियोटेलीग्राफिक सम्मेलन में 'रेडियो' शब्द को अंतर्राष्ट्रीय मान्यता मिली। फिर 1920 के दशक में जब आवाज और संगीत का प्रसारण शुरू हुआ, तब यह तकनीक केवल वैज्ञानिक प्रयोग नहीं रही, बल्कि जनजीवन का हिस्सा बन गई। धीरे-धीरे 'वायरलेस' शब्द पीछे छूट गया और 'रेडियो' लोगों की जुबान पर बस गया। एक ऐसी अदृश्य किरण, जो दूरियों को मिटाकर दुनिया को एक ही ध्वनि में जोड़ देती है।

डिजिटल एजुकेशन के अगुआ देश लौट रहे किताबों की ओर

बीते डेढ़ दशक में स्कूलों और विश्वविद्यालयों में स्मार्ट क्लासरूम और ऑनलाइन कंटेंट को आधुनिक शिक्षा का पर्याय मान लिया गया। यह माना गया कि अगर बच्चों को बचपन से ही डिजिटल माध्यमों से पढ़ाया जाएगा, तो वे भविष्य की टेक्नोलॉजी आधारित दुनिया के लिए बेहतर तैयार होंगे। दुनिया जिस डिजिटल शिक्षा मॉडल को भविष्य मान रही थी, वही मॉडल अब पुनर्मूल्यांकन के दौर से गुजर रहा है। दुनिया की सबसे अधिक डिजिटल शिक्षा प्रणालियों में अग्रणी स्वीडन और फिनलैंड जैसे देश फिर से किताब, कागज और पेन की ओर लौट रहे हैं। यह बदलाव अचानक नहीं आया, बल्कि पिछले कुछ वर्षों में सामने आए शोध और अनुभव, जिसने शिक्षा नीति-निर्माताओं को सोचने पर मजबूर किया है।

राजेश जैन
लेखक

हाइब्रिड मॉडलः शिक्षा का नया रास्ता

आज कई विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुंच रहे हैं कि शिक्षा का भविष्य न तो पूरी तरह डिजिटल है और न ही पूरी तरह पारंपरिक। दोनों का संतुलित मिश्रण ही सबसे प्रभावी मॉडल हो सकता है। उदाहरण के लिए, जटिल वैज्ञानिक प्रयोगों, डेटा विश्लेषण और कोडिंग सीखने में डिजिटल उपकरण बेहद उपयोगी हैं। वहीं साहित्य, इतिहास या भाषा जैसे विषयों में किताबों के माध्यम से पढ़ना अधिक प्रभावी हो सकता है। इसलिए कई देश अब 'हाइब्रिड लर्निंग मॉडल' की ओर बढ़ रहे हैं, जिसमें किताब और तकनीक दोनों का संतुलित उपयोग हो।

डिजिटल शिक्षा

करीब 15 साल पहले दुनिया के कई विकसित देशों ने शिक्षा के डिजिटल भविष्य की परिकल्पना की। इस सोच के पीछे कई तर्क थे। पहला, तकनीक से पढ़ाई को अधिक रोचक और इंटरैक्टिव बनाया जा सकता है। दूसरा, इंटरनेट के माध्यम से बच्चों को वैश्विक ज्ञान तक तुरंत पहुंच मिल सकती है। तीसरा, डिजिटल उपकरणों के जरिए शिक्षा को अधिक व्यक्तिगत यानी पर्सनलाइज लर्निंग बनाया जा सकता है। स्वीडन उन देशों में था, जिसने सबसे पहले स्कूलों में डिजिटल माध्यमों को बड़े पैमाने पर अपनाया। 2009 के आसपास वहां के स्कूलों में टैबलेट और कंप्यूटर को पाठ्यपुस्तकों का विकल्प बनाने की शुरुआत हुई। धीरे-धीरे कई स्कूलों में किताबों की जगह डिजिटल उपकरणों ने ले ली। फिनलैंड, जो अपनी शिक्षा प्रणाली के लिए दुनिया में सबसे अधिक प्रशंसित देशों में से एक है, वहां भी स्कूलों में डिजिटल उपकरणों को बड़े उत्साह के साथ अपनाया गया। कई जगह छात्रों को मुफ्त लैपटॉप दिए गए और पढ़ाई का बड़ा हिस्सा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर स्थानांतरित कर दिया गया। उस समय यह मॉडल इतना आकर्षक लगा कि दुनिया के कई देशों ने इसे अपनाने की कोशिश की। भारत में भी डिजिटल क्लासरूम और स्मार्ट एजुकेशन जैसे शब्द शिक्षा सुधार के प्रमुख नारे बन गए।

स्वीडन की नीति में बड़ा बदलाव

स्वीडन ने अपनी शिक्षा नीति में बड़ा बदलाव किया है। सरकार ने स्कूलों में फिर से मुद्रित पाठ्यपुस्तकों को प्राथमिकता देते हुए करोड़ों यूरो का निवेश किया है ताकि हर छात्र तक किताबें पहुंचाई जा सकें। सरकार छह साल से कम उम्र के बच्चों के लिए डिजिटल टूल्स के उपयोग को समाप्त करने की योजना पर भी विचार कर रही है। वहां कई स्कूलों में फिर से शांत पठन समय, हस्तलेखन अभ्यास और पारंपरिक बोर्ड आधारित शिक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है।

तकनीक का विरोध नहीं, संतुलन की खोज

यह समझना जरूरी है कि यह बदलाव तकनीक के खिलाफ कोई आंदोलन नहीं है। अधिकांश शिक्षाविद् यह मानते हैं कि तकनीक शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसे पूरी तरह नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। असल बहस तकनीक के उपयोग की सीमा और संतुलन को लेकर है। यूनेस्को की एक रिपोर्ट भी यही चेतावनी देती है कि शिक्षा में तकनीक का इस्तेमाल इस तरह होना चाहिए कि वह शिक्षक-केंद्रित शिक्षा का विकल्प न बन जाए। तकनीक एक साधन है, लक्ष्य नहीं।

जब डिजिटल मॉडल पर उठने लगे सवाल

लगभग एक दशक तक डिजिटल शिक्षा के प्रयोग के बाद कुछ समस्याएं धीरे-धीरे सामने आने लगीं। शिक्षकों, अभिभावकों और शोधकर्ताओं ने पाया कि तकनीक ने पढ़ाई को आसान तो बनाया है, लेकिन कई बुनियादी कौशल कमजोर भी कर दिए हैं। स्वीडन में किए गए अध्ययनों में पाया गया कि स्क्रीन पर पढ़ने वाले छात्रों की एकाग्रता और गहराई से समझने की क्षमता कम हो रही है। चौथी कक्षा के छात्रों की पढ़ने की क्षमता का आकलन करने वाले अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन प्रोग्रेस इन इंटरनेशनल रीडिंग लिटरेसी स्टडी में 2016 और 2021 के बीच स्वीडन के बच्चों के पढ़ने के स्कोर में गिरावट दर्ज की गई। शिक्षाविदों ने देखा कि जब बच्चे टैबलेट या लैपटॉप पर पढ़ते हैं, तो उनका ध्यान जल्दी भटकता है। एक क्लिक में गेम, सोशल मीडिया या अन्य वेबसाइटों तक पहुंच उन्हें पढ़ाई से दूर कर देती है। डिजिटल उपकरण पढ़ाई के साथ-साथ मनोरंजन का भी माध्यम हैं, इसलिए उनमें विचलन की संभावना अधिक होती है।

स्क्रीन का मन और मस्तिष्क पर प्रभाव

नई डिजिटल शिक्षा पर सवाल उठने के पीछे सबसे बड़ा कारण बच्चों के मस्तिष्क और व्यवहार पर स्क्रीन के प्रभाव को लेकर बढ़ती चिंता है। नॉर्वे और अमेरिका के कई शोध बताते हैं कि जब बच्चे हाथ से लिखते हैं, तो उनके मस्तिष्क के कई हिस्से एक साथ सक्रिय होते हैं। अक्षर बनाने की प्रक्रिया, उंगलियों का दबाव और लिखावट की संरचना दिमाग में मजबूत स्मृति चिन्ह (मेमोरी ट्रेस) बनाते हैं। इसके विपरीत, कीबोर्ड पर टाइपिंग अपेक्षाकृत एक यांत्रिक प्रक्रिया है। इसमें मस्तिष्क जानकारी को उतनी गहराई से प्रोसेस नहीं करता। यही कारण है कि हाथ से नोट्स लिखने वाले छात्र विषयों को अधिक गहराई से समझते हैं। इसके अलावा लगातार स्क्रीन देखने से आंखों पर तनाव, नींद की समस्या और मानसिक बेचैनी भी बढ़ने की आशंका रहती है। फिनलैंड के कुछ अध्ययन बताते हैं कि किशोर औसतन प्रतिदिन लगभग छह घंटे स्क्रीन पर बिताते हैं, जो मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों के लिए चिंताजनक है।

भारत के लिए सबक

भारत में डिजिटल शिक्षा तेजी से विस्तार कर रही है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और स्मार्ट क्लासरूम शिक्षा के नए प्रतीक बन चुके हैं। अगर डिजिटल माध्यमों को बिना सोचे-समझे अपनाया गया, तो इसके दुष्परिणाम भी सामने आ सकते हैं। देश में जहां पहले से ही बच्चों का स्क्रीन टाइम तेजी से बढ़ रहा है, वहां स्कूलों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

शिक्षा का मूल उद्देश्य

दरअसल, शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं है, बल्कि सोचने, समझने और विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना है। किताब पढ़ना इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमें धीमी गति से सोचने व गहराई से समझने के लिए प्रेरित करता है। पिछले दशक में दुनिया ने शिक्षा में तकनीक का व्यापक प्रयोग किया और उससे जुड़े अनुभव भी प्राप्त किए। अब वही अनुभव नीति-निर्माताओं को संतुलित दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। भविष्य की कक्षा शायद ऐसी होगी, जहां स्मार्ट बोर्ड भी होगा और ब्लैकबोर्ड भी, टैबलेट भी होगा और किताब भी, एआई भी होगा और शिक्षक का मार्गदर्शन भी।

नोटिस बोर्ड

- जिला सेवायोजन कार्यालय, कासगंज में 12 मार्च को रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। रोजगार मेले में 18 से 25 वर्ष की आयु के हाईस्कूल, इंटर, स्नातक, आईटीआई उत्तीर्ण अभ्यर्थियों का चयन किया जाएगा। रोजगार मेले में साक्षात्कार के माध्यम से लगभग एक हजार रिक्त पद भरे जाएंगे। मेले में 40 कंपनियां अपनी कंपनी के लिए अभ्यर्थियों का चयन करेंगी। रोजगार मेले में सम्मिलित होने के लिए अभ्यर्थियों को वेबसाइट पर अपना पंजीयन कराना होगा। अभ्यर्थी पोर्टल पर प्रदर्शित किसी भी कंपनी में ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

- ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय की ओर से स्नातक व परास्नातक में प्रवेश हेतु 15 मार्च से आवेदन प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। इच्छुक विद्यार्थी आवेदन के लिए समर्थ पोर्टल पर पंजीकरण करा सकेंगे। इस संबंध में कुलपति ने बताया कि एक सप्ताह पहले कोर्सवार सीटों की संख्या वेबसाइट पर अपलोड करवा दी गई थी। समर्थ पोर्टल 15 मार्च से खुल जाएगा। यह आवेदन प्रक्रिया 45 दिनों तक चलेगी। इच्छुक विद्यार्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट https://kmclu.ac.in पर समर्थ पोर्टल का लिंक पर जाकर आवेदन कर सकते हैं।

कैंपस में पहला दिन

अभी भी याद है पहली बार मेस में खाना

डॉ. अरुण जोशी
मेडिकल सुपरिंटेंडेंट
राजकीय अस्पताल, हल्द्वानी

नैनीताल की शांत वादियों में मेरा बचपन बीता। पहाड़ों की उस निश्चल दुनिया से निकलकर जब मैं सन् 1977 में लाला लाजपत राय स्मारक चिकित्सा महाविद्यालय, मेरठ पहुंचा, तो मन में एक अजीब सी कशमकश और अनजाना भय था। उन दिनों मेडिकल कॉलेजों में रैगिंग के किस्से आम थे, इसलिए सीनियरों के व्यवहार को लेकर मन में कई नकारात्मक भ्रम पाल रखे थे, लेकिन कॉलेज की देहरी पर कदम रखते ही पहले ही दिन वे सारे डर काफूर हो गए।

कैंपस का वातावरण उम्मीद से बिल्कुल उलट था। मुझे आज भी अचंभित कर देता है कि उन सीनियरों ने, जिन्हें लेकर मैं डरा हुआ था, पहले ही दिन से न केवल मेरा, बल्कि सभी नए छात्रों का हाथ थाम लिया। वहां रैगिंग नहीं, बल्कि एक बड़े भाई जैसा अपनत्व और सहयोग था। जीवन का वह पहला अनुभव जब मैं घर की सुख-सुविधा छोड़कर मेस में खाना खाने पहुंचा, तो भावुक हो गया। मैंने कभी कल्पना नहीं की थी कि परिवार से दूर, बिल्कुल अजनबियों के साथ एक ही टेबल पर बैठकर भोजन करूंगा, लेकिन वह मेस की टेबल केवल खाना खाने की जगह नहीं थी, बल्कि रिश्तों की पाठशाला थी। हंसी-मजाक के उस दौर के बीच खाने का वह स्वाद आज भी मेरी जुबान पर ताजा है। वहीं से सहपाठियों के साथ परिचय का सिलसिला शुरू हुआ, जो धीरे-धीरे अटूट दोस्ती में बदल गया। हॉस्टल की पहली रात और वॉर्डन द्वारा समझाए गए कड़े नियमों ने एहसास कराया कि अब आजाद पंछी को अनुशासन के पिंजरे में खुद को ढालना होगा। वह अनुशासन ही था, जिसने हमें सिखाया कि समय की कीमत क्या होती है और एक डॉक्टर के जीवन में नैतिकता का क्या महत्व है। पहाड़ की मासूमियत और मेरठ की इस अनुशासित मेधा ने मिलकर मेरे भीतर एक नए इंसान को जन्म दिया। वह सफेद कोट पहनना केवल एक करियर की शुरुआत नहीं थी, बल्कि सेवा और समर्पण के उस सफर का आगाज था, जिसकी नींव उसी साल मेरठ की मिट्टी में रखी गई थी। आज पीछे मुड़कर देखता हूं, तो वे यादें जीवन की सबसे अनमोल थाती लगती हैं।

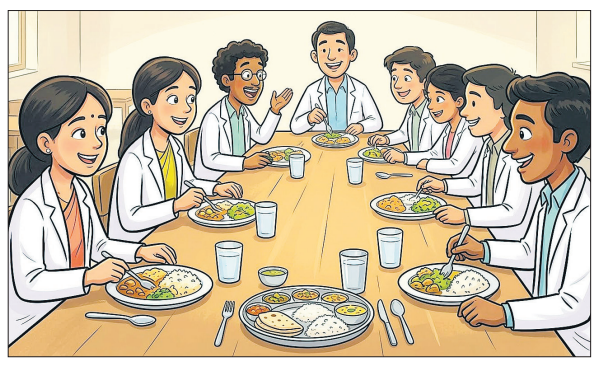

करेंट अफेयर्स

- हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में भारत की पहली रिंग मेट्रो का उद्घाटन किया। मजलिस पार्क-मौजपुर-बाबरपुर कॉरिडोर के शुरू होने से पिंक लाइन की सर्कुलर कनेक्टिविटी पूरी हो गई है, जिससे यह राष्ट्रीय राजधानी के चारों ओर पूरी तरह से संचालित रिंग रूट बन गई है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री ने दीपाली चौक-मजलिस पार्क कॉरिडोर (मैजेंटा लाइन विस्तार) का भी उद्घाटन किया। इसके साथ ही दिल्ली मेट्रो फेज-5 के तहत नए मेट्रो कॉरिडोर की आधारशिला रखी।
- हाल ही में आईसीसी पुरुष टी-20 क्रिकेट विश्व कप 2026 के फाइनल में भारत ने न्यूजीलैंड को अहमदाबाद में हरा दिया। इस जीत के साथ भारत तीन बार टी-20 विश्व कप जीतने वाला पहला देश बन गया। साथ ही खिताब को सफलतापूर्वक डिफेंड करने वाली पहली टीम भी बना।
- हाल ही में सबा शॉल को जम्मू-कश्मीर की उच्च सुरक्षा वाली सुधारात्मक संस्था सेंट्रल जेल श्रीनगर की पहली कश्मीरी महिला प्रमुख नियुक्त किया गया है। उनकी नियुक्ति गृह विभाग द्वारा जारी सरकारी आदेश के तहत की गई। इस निर्णय के साथ जम्मू-कश्मीर कारागार विभाग में एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक फेरबदल लागू हुआ है।
- हाल ही में दीपक गुप्ता ने गेल (India) Limited के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी) का पदभार संभाला है। उन्होंने संदीप कुमार गुप्ता का स्थान लिया, जो 28 फरवरी को सेवानिवृत्त हुए।
- हाल ही में ईरान ने मोजतबा खामेनेई को सुप्रीम लीडर चुना है। मोजतबा इजरायली हमले में मारे गए अपने पिता अली खामेनेई की जगह इस पद को संभालेंगे। यह फैसला 1989 के बाद इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान में नेतृत्व परिवर्तन की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक माना जा रहा है।
- हाल ही में मध्य प्रदेश के कुनो राष्ट्रीय उद्यान में मादा चीता ज्वाला ने पांच शावकों को जन्म दिया। भारत अब चीता की संख्या बढ़कर 53 हो गई है। इन शावकों के जन्म के बाद भारत में जन्मे चीता शावकों की संख्या बढ़कर 33 हो गई है। यह घटना भारत में चीते का 10 वां सफल लिटर (जन्म समूह) भी दर्शाती है, जो यह संकेत देती है कि देश में चीता पुनर्स्थापन कार्यक्रम धीरे-धीरे सफल होता जा रहा है और भारत की वन्यजीव संरक्षण यात्रा को नई मजबूती मिल रही है।

जॉब अलर्ट

आईडीबीआई बैंक

- पद का नाम-सहायक प्रबंधक ग्रेड 'ए'
- पदों की संख्या- 200
- शैक्षणिक योग्यता-स्नातक और अमुभव
- आयु सीमा -21-30 वर्ष
- आवेदन की अंतिम तिथि- 19 मार्च 2026
- वेबसाइट-idbi.bank.in

भारतीय नौसेना

- पद का नाम- अग्निवीर एसएसआर, एमआर और एसएसआर (मेडिकल)
- शैक्षणिक योग्यता- साइंस (पीसीबी) में 50% अंक
- वेतन-14,600 रुपये (प्रशिक्षण के दौरान वजीफा)
- आयु सीमा -उम्मीदवारों का जन्म 01 मई 2005 और 31 अक्टूबर 2009 के बीच होना चाहिए
- आवेदन की अंतिम तिथि- 6 अप्रैल 2026
- वेबसाइट- joinindiannavy.gov.in

इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड

- पद का नाम- ट्रेड अप्रेंटिस, टेक्नीशियन अप्रेंटिस और ग्रेजुएट अप्रेंटिस
- पदों की संख्या- 405 (पश्चिमी क्षेत्र के सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में
- विज्ञापन नंबर - आईओसीएल/एमकेटीजी/डब्ल्यूआर/एपीपीआर/3/2025-26
- भत्ता- शिक्षुता अधिनियम, 1961/1973 और शिक्षुता नियम 1992/2019/2025 के अनुसार निर्धारित
- शैक्षणिक योग्यता - मैट्रिक + आईटीआई / कक्षा 12 वीं / इंजीनियरिंग में डिप्लोमा / कोई भी स्नातक डिग्री (विषय के अनुसार)
- आयु सीमा - 18 वर्ष से अधिकतम आयु 24 वर्ष (दिनांक 28.02.2026 तक)
- आवेदन की अंतिम तिथि- 26 मार्च 2026
- वेबसाइट- www.iocl.com

इन विषयों पर मजबूत पकड़ से सरकारी नौकरी करें पक्की

सरकारी नौकरी आज भी देश के लाखों युवाओं का सपना है। हर साल बड़ी संख्या में अभ्यर्थी रेलवे, बैंकिंग, एसएससी और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में जुटते हैं, लेकिन अक्सर छात्रों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि वे अपनी पढ़ाई का फोकस किन विषयों पर रखें? कई बार सीमित समय और विशाल सिलेबस के कारण तैयारी बिखर जाती है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर अभ्यर्थी कुछ प्रमुख विषयों पर मजबूत पकड़ बना लें, तो सफलता की संभावना काफी बढ़ जाती है, जो अधिकांश सरकारी परीक्षाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आइए आज आपको बताते हैं, कौन से हैं वे विषय, जिन पर नियमित अभ्यास और सही रणनीति के साथ तैयारी करने से प्रतियोगी परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन किया जा सकता है।

नवनीत तिवारी
करियर काउंसर

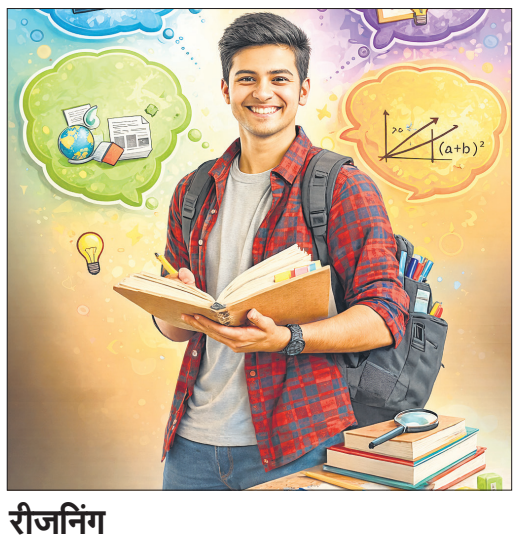

रीजनिंग

रीजनिंग विषय अभ्यर्थियों की तार्किक सोच और विश्लेषण क्षमता को परखता है। इसमें पजल, सीरीज, कोडिंग-डिकोडिंग और एनॉलिटिकल प्रश्न पूछे जाते हैं। लगातार अभ्यास से रीजनिंग में गति और सटीकता दोनों बढ़ाई जा सकती है, जो परीक्षा हाई स्कोरिंग में मदद करेगी।

गणित

गणित लगभग हर प्रतियोगी परीक्षा का अहम हिस्सा होता है। बेसिक मैथ्स के टॉपिक जैसे दशमलव, भिन्न, प्रतिशत, लाभ-हानि आदि पर अच्छी पकड़ होने से अभ्यर्थी आसानी से अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं। नियमित अभ्यास से गणित में गति और सटीकता दोनों बढ़ती हैं।

करेंट अफेयर्स

करेंट अफेयर भी प्रतियोगी परीक्षाओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है। देश-दुनिया की प्रमुख घटनाएं, सरकारी योजनाएं, खेल और पुरस्कार से जुड़े सवाल अक्सर पूछे जाते हैं। इसके लिए रोजाना अखबार पढ़ना और करेंट अफेयर के नियमित नोट्स बनाना काफी उपयोगी साबित होता है।

एडवांस मैथ्स

कई प्रतियोगी परीक्षाओं में एडवांस मैथ्स से भी प्रश्न पूछे जाते हैं। इसमें एल्जेब्रा, त्रिकोणमिति और ज्यामिति जैसे टॉपिक शामिल होते हैं। इन विषयों की अच्छी समझ होने पर रेलवे, एसएससी और अन्य सरकारी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करना आसान हो जाता है।

जनरल स्टडी

किसी भी सरकारी परीक्षा में जनरल स्टडीज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसमें इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और विज्ञान जैसे विषय शामिल होते हैं। यदि छात्र रोज थोड़ा-थोड़ा पढ़कर इन विषयों की बुनियादी समझ मजबूत करें, तो परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं।